

UP Board Class 12 Hindi 301 (DE) Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hour 15 Minutes

Maximum Marks :100

Total Questions :14

सामान्य निर्देश

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(खंड क)

1.(क) 'शृंगार रस मण्डन' के रचनाकार हैं :

- (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (ii) महादेवी वर्मा
- (iii) गोसाई विठ्ठलनाथ
- (iv) राधाचरण गोस्वामी

Correct Answer : (iii) गोसाई विठ्ठलनाथ

उत्तर : 'शृंगार रस मण्डन' के रचनाकार गोसाई विठ्ठलनाथ हैं। यह ग्रंथ शृंगार रस की विशिष्ट व्याख्या करता है और हिंदी काव्यशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

Quick Tip

किसी रचना के रचनाकार को याद रखने के लिए उसे संबंधित साहित्यिक युग या शैली के साथ जोड़कर समझना चाहिए।

1.(ख) 'ब्राह्मण' पत्र के संपादक हैं :

- (i) प्रताप नारायण मिश्र
- (ii) बालकृष्ण भट्ट
- (iii) राधाचरण गोस्वामी
- (iv) लल्लू लाल

Correct Answer : (ii) बालकृष्ण भट्ट

उत्तर : 'ब्राह्मण' पत्र के संपादक बालकृष्ण भट्ट थे। यह पत्र हिंदी गद्य विकास और सामाजिक सुधारों से संबंधित विषयों पर लेख प्रकाशित करता था।

Quick Tip

हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख पत्रों और उनके संपादकों को कालक्रम में याद करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

1.(ग) खड़ी बोली गद्य के जनक हैं :

- (i) जयशंकर प्रसाद
- (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (iii) प्रताप नारायण मिश्र
- (iv) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (iv) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : खड़ी बोली गद्य के जनक लल्लू लाल माने जाते हैं, जो इस प्रश्न के विकल्पों में नहीं हैं। उनकी रचना 'प्रेम सागर' हिंदी गद्य के प्रारंभिक उदाहरणों में से एक है।

Quick Tip

हिंदी भाषा के विकास क्रम को भली-भाँति समझकर विभिन्न युगों के लेखकों को पहचाना जा सकता है।

1.(घ) 'रसज्ञ-रंजन' कृति के लेखक हैं :

- (i) श्याम सुन्दर दास
- (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- (iii) गुलाब राय
- (iv) महावीर प्रसाद द्विवेदी

Correct Answer : (iii) गुलाब राय

उत्तर : 'रसज्ञ-रंजन' कृति के लेखक गुलाब राय हैं। यह कृति रस और साहित्यिक सौंदर्य पर आधारित है तथा हिंदी आलोचना में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

Quick Tip

हिंदी आलोचना साहित्य के प्रमुख ग्रंथों और उनके लेखकों को याद रखने के लिए उनके युग और प्रवृत्तियों से जोड़कर अध्ययन करें।

1.(ङ) 'रेखाचित्र' पर आधारित रचना है :

- (i) मुद्रा राक्षस
- (ii) साहित्यालोचन
- (iii) अतीत के चलचित्र

(iv) अन्तरिक्ष की यात्रा

Correct Answer : (iii) अतीत के चलचित्र

उत्तर : 'अतीत के चलचित्र' रेखाचित्र पर आधारित एक प्रमुख रचना है। यह रेखाचित्र शैली में लिखी गई आत्मकथात्मक एवं संस्मरणात्मक रचनाओं में से एक है।

Quick Tip

रेखाचित्र साहित्य को संस्मरण, आत्मकथा, निबंध और यात्रा वृत्तांत से अलग पहचानने के लिए उनकी विशिष्ट शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करें।

2.(क) हिन्दी साहित्य का प्रथम कवि माना जाता है :

- (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को
- (ii) सुमित्रानन्दन पंत को
- (iii) सरहपा को
- (iv) 'अज्ञेय' को

Correct Answer : (iii) सरहपा को

उत्तर : हिन्दी साहित्य का प्रथम कवि सरहपा को माना जाता है। वे बौद्ध सिद्ध परंपरा के प्रमुख कवि थे और हिन्दी के प्रारंभिक अपभ्रंश रूप में रचनाएँ कीं।

Quick Tip

सरहपा को 'सिद्ध साहित्य' का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में बौद्ध धर्म और योग पर बल दिया।

2.(ख) 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है :

- (i) 1949 ई०
- (ii) 1952 ई०
- (iii) 1969 ई०
- (iv) 1959 ई०

Correct Answer : (ii) 1952 ई०

उत्तर : 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष 1952 ई० है। यह प्रयोगवादी कविता संग्रहों में एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसे अज्ञेय ने संपादित किया था।

Quick Tip

'सप्तक' श्रृंखला हिन्दी साहित्य में नई कविता और प्रयोगवादी धारा को विकसित करने में सहायक रही।

2.(ग) 'कठिन काव्य के प्रेत' कहे जाते हैं :

- (i) भूषण
- (ii) घनानन्द
- (iii) केशवदास
- (iv) जायसी

Correct Answer : (iii) केशवदास

उत्तर : केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है। उन्होंने अत्यधिक अलंकरणयुक्त, दुरूह और जटिल काव्य रचनाएँ कीं, जिससे उनका काव्य कठिन माना जाता है।

Quick Tip

केशवदास की प्रमुख कृतियाँ 'रसिकप्रिया' और 'कविप्रिया' हैं, जिनमें उन्होंने अलंकार और शब्द-चमत्कार का प्रयोग किया।

2.(घ) 'सामधेनी' काव्य के रचयिता हैं :

- (i) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (ii) जयशंकर प्रसाद
- (iii) नरेन्द्र शर्मा
- (iv) भवानी प्रसाद मिश्र

Correct Answer : (iii) नरेन्द्र शर्मा

उत्तर : 'सामधेनी' काव्य के रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं। यह काव्य उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों से ओतप्रोत है।

Quick Tip

नरेन्द्र शर्मा छायावादी और प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित कवि थे। उनकी कृतियाँ राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कृति पर केंद्रित होती थीं।

2.(ङ) निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ रीतिकालीन काव्य-परंपरा से सम्बन्धित है ?

- (i) बिहारी 'सतसई'
- (ii) 'अखरावट'
- (iii) 'कामायनी'
- (iv) 'उर्वशी'

Correct Answer : (i) बिहारी 'सतसई'

उत्तर : 'बिहारी सतसई' रीतिकालीन काव्य परंपरा से संबंधित ग्रन्थ है। यह दोहों में रचित प्रसिद्ध काव्य है, जिसमें शृंगार रस की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

Quick Tip

रीतिकालीन काव्य में शृंगार रस की प्रधानता होती थी, और इसमें नायिका-भेद, अलंकार, एवं लक्षणा-व्यंजना का सुंदर प्रयोग किया जाता था ।

3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं, जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा ? लाखों-करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है । दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है । हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है । पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं । नाना भाँति के अनगढ़ नग विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उनको जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नयी शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे अनमोल हो जाते हैं । देश के नर-नारियों के रूप-मण्डन और सौन्दर्य-प्रसाधन में इन छोटे पत्थरों का भी सदा से कितना भाग रहा है, अतएव हमें उनका ज्ञान होना भी आवश्यक है ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश 'वसुन्धरा' पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक भगवतीचरण वर्मा हैं । यह पाठ धरती माता की संपदाओं और उनके महत्व को दर्शाता है ।

Quick Tip

किसी भी गद्यांश का अध्ययन करते समय उसके लेखक और पाठ के केंद्रीय विचार को समझना आवश्यक होता है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश का तात्पर्य यह है कि प्रकृति में पाई जाने वाली खनिज संपदाएँ और पत्थर अनगढ़ अवस्था में साधारण लगते हैं, लेकिन जब उन्हें कुशल शिल्पियों द्वारा तराशा जाता है, तो वे अनमोल बन जाते हैं । इनका उपयोग न केवल सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है, बल्कि ये राष्ट्रीय संपदा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं ।

Quick Tip

प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग और उनका कुशल प्रबंधन ही राष्ट्र के आर्थिक विकास में सहायक होता है ।

(iii) हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए किसकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है ?

उत्तर : हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए धरती की कोख में छिपी अमूल्य निधियों, धातुओं, खनिजों और मिट्टियों की जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। इन प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग देश की आर्थिक प्रगति में सहायक होता है।

Quick Tip

खनिज संपदाओं और प्राकृतिक संसाधनों का अध्ययन एवं संरक्षण आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(iv) उपर्युक्त गद्यांश में राष्ट्र निर्माण के किस प्रथम तत्त्व का महत्त्व दर्शाया गया है ?

उत्तर : इस गद्यांश में राष्ट्र निर्माण के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और उनके सही उपयोग के महत्त्व को दर्शाया गया है। खनिज संपदाएँ, मिट्टियाँ, और पत्थर आदि, जब सही तरीके से उपयोग किए जाते हैं, तो वे न केवल सौंदर्य का प्रतीक बनते हैं, बल्कि देश की आर्थिक उन्नति में भी सहायक होते हैं।

Quick Tip

राष्ट्र निर्माण के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग और उनका सतत विकास अत्यंत आवश्यक होता है।

(v) धरती को 'वसुन्धरा' क्यों कहा जाता है ?

उत्तर : धरती को 'वसुन्धरा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें अनेक अमूल्य निधियाँ (खनिज, धातुएँ, जल स्रोत, उपजाऊ मिट्टी आदि) भरी हुई हैं, जो संपूर्ण जीवमंडल के जीवन का आधार हैं। इन प्राकृतिक संपदाओं के कारण ही धरती को 'वसुन्धरा' अर्थात् धन-सम्पदा से युक्त कहा जाता है।

Quick Tip

'वसुन्धरा' शब्द का अर्थ होता है - वह धरती जो बहुमूल्य धातुओं और खनिजों से समृद्ध है।

अथवा

जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के भरण-भोषण की, उसके शिक्षण की जिससे वह समाज के एक जिम्मेदार घटक के नाते अपना योगदान करते हुए अपने विकास में समर्थ हो सके, उसके लिए स्वस्थ एवं क्षमता की अवस्था में जीविकोपार्जन की ओर यदि किसी भी कारण वह सम्भव न हो तो भरण-पोषण की तथा उचित अवकाश की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समाज की है। प्रत्येक सभ्य समाज इसका किसी न किसी रूप में निर्वाह करता है। प्रगति के यही मुख्य मानदण्ड हैं। अतः न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी,

शिक्षा, जीविकोपार्जन के लिए रोजगार, सामाजिक हमें मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकार करना होगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'समाज की जिम्मेदारी' है और इसके लेखक (लेखक का नाम) हैं। इस गद्यांश में व्यक्ति के समग्र विकास में समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

Quick Tip

किसी भी गद्यांश का अध्ययन करते समय उसके शीर्षक और केंद्रीय विचार को समझना आवश्यक होता है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंश का तात्पर्य यह है कि समाज की जिम्मेदारी केवल व्यक्ति के जन्म से लेकर उसके पालन-पोषण तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसके शिक्षा, रोजगार, और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को भी सुनिश्चित करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति किसी कारणवश जीविकोपार्जन करने में असमर्थ हो जाता है, तो समाज को उसकी सहायता करनी चाहिए ताकि वह सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके। यह किसी भी सभ्य समाज की पहचान होती है।

Quick Tip

समाज का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को जीवनयापन के आवश्यक संसाधन और अवसर प्रदान करे।

(iii) लेखक के अनुसार मनुष्य के विकास में समाज की क्या भूमिका है ?

उत्तर : लेखक के अनुसार मनुष्य के विकास में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज को व्यक्ति के पालन-पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और जीवन की अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग देना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति किसी कारणवश अपने जीवन-यापन में असमर्थ हो जाता है, तो समाज को उसके लिए भरण-पोषण और सुरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

Quick Tip

समाज और व्यक्ति एक-दूसरे के पूरक होते हैं। समाज व्यक्ति के विकास में सहायक होता है, और व्यक्ति समाज के निर्माण में योगदान देता है।

(iv) मनुष्य की प्रगति के मुख्य मानदण्ड क्या हैं ?

उत्तर : मनुष्य की प्रगति के मुख्य मानदण्ड निम्नलिखित हैं :

न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी

शिक्षा

जीविकोपार्जन के लिए रोजगार के अवसर

सामाजिक सुरक्षा और न्याय

समाज में व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता सुनिश्चित करना

इन मानदण्डों के आधार पर ही किसी समाज की प्रगति को आँका जा सकता है ।

Quick Tip

मनुष्य की प्रगति का आकलन केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, और जीवन की गुणवत्ता से भी किया जाता है ।

(v) लेखक के अनुसार मनुष्य के मूल अधिकार क्या होने चाहिए ?

उत्तर : लेखक के अनुसार मनुष्य के मूल अधिकार निम्नलिखित होने चाहिए :

न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी

सभी के लिए शिक्षा

रोजगार के समान अवसर

सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था

सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार

इन अधिकारों को मूलभूत अधिकारों के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को सम्मान और गरिमा के साथ व्यतीत कर सके ।

Quick Tip

मूलभूत अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को गरिमा और स्वतंत्रता से जीने का अवसर प्रदान करते हैं, जो किसी भी लोकतांत्रिक समाज की पहचान है ।

4. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कृपानिधान सुजान संभु हिय की गति जानी ।

दियौ सीस पर ठाम बाम करि कै मनमानी ॥

सकुचति ऐचति अंग गंग सुख संग लजानी ।

जटाजूट हिम कूट सघन बन सिमिरि समानी ॥

(i) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ का शीर्षक व कवि का नाम लिखिए ।

उत्तर : उपर्युक्त पद्यांश 'गंगावतरण' नामक काव्यांश से लिया गया है, जिसके रचनाकार तुलसीदास हैं। इस काव्यांश में भगवान शिव और गंगा के संबंध का सुंदर वर्णन किया गया है।

Quick Tip

किसी भी पद्यांश को समझने के लिए उसके संदर्भ और केंद्रीय भाव को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक होता है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित अंश में यह बताया गया है कि जब गंगा भगवान शिव के जटाजूट में समाहित हुई, तो वे संकोच और लज्जा का अनुभव करने लगीं। वे शिव के शरीर से लिपटकर इस प्रकार समाहित हो गईं, मानो हिमालय के घने वन में विलीन हो रही हों। इस पंक्ति में गंगा के कोमल स्वभाव और शिव के विराट रूप का सौंदर्यपूर्ण वर्णन किया गया है।

Quick Tip

काव्य में उपमाओं और अलंकारों का सही अध्ययन करने से पद्यांश की गहराई को समझने में सहायता मिलती है।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में गंगा और शिवजी का किस रूप में वर्णन किया गया है ?

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों में गंगा को एक लज्जालु और संकोची नायिका के रूप में चित्रित किया गया है, जो भगवान शिव के संपर्क में आने पर लज्जित अनुभव कर रही हैं। वहीं, शिवजी को कृपानिधान (दया से परिपूर्ण) और सुजान (समझदार) बताया गया है, जिन्होंने गंगा की गति को समझकर उन्हें अपनी जटाओं में स्थान दिया।

Quick Tip

भारतीय काव्यशास्त्र में प्रकृति के मानवीकरण (Personification) की परंपरा रही है, जहाँ गंगा जैसी नदियों को स्त्री रूप में चित्रित किया जाता है।

(iv) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा रस प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में मुख्य रूप से शृंगार रस का प्रयोग हुआ है, क्योंकि इसमें गंगा की संकोच, लज्जा और उनके शिवजी के साथ संबंध का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त, शिवजी के कृपा और भक्ति भाव के कारण इसमें भक्तिरस का भी आभास होता है।

Quick Tip

श्रृंगार रस का स्थायी भाव 'रति' होता है, और यह केवल नायक-नायिका के प्रेम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि प्रकृति और ईश्वर के प्रति भक्ति में भी व्यक्त होता है।

(v) प्रस्तुत पद्यांश में शिवजी ने गंगा को अपने शरीर पर किस रूप में स्थान दिया ?

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में शिवजी ने गंगा को अपनी जटाओं में स्थान दिया है। जब गंगा पृथ्वी पर उतरने लगीं, तो उनकी वेगवती धारा के कारण पृथ्वी को क्षति होने की संभावना थी। इसे रोकने के लिए भगवान शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण किया और फिर धीरे-धीरे उन्हें पृथ्वी पर प्रवाहित किया।

Quick Tip

गंगावतरण की यह कथा हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण मानी जाती है और इसे शिवजी की कृपा और धैर्य का प्रतीक माना जाता है।

अथवा

सावधान, मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी नादान;
फूल - काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार;
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त पद्यांश 'विज्ञान और मानव' शीर्षक से लिया गया है और इसके रचनाकार सुमित्रानंदन पंत हैं। इस कविता में विज्ञान के दुरुपयोग के प्रति सावधान करने का संदेश दिया गया है।

Quick Tip

किसी भी कविता के भाव को समझने के लिए उसके शीर्षक और कवि की रचनात्मक शैली को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक होता है।

(ii) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रेखांकित पंक्तियों में कवि ने मानव को यह बताया है कि वह अभी भी एक शिशु के समान अ-परिपक्व है, जिसे यह समझ नहीं है कि क्या सही है और क्या गलत । उसे यह ज्ञान नहीं है कि फूल (अर्थात् अच्छाई) और काँटे (अर्थात् बुराई) में क्या अंतर है । अर्थात् विज्ञान के सही और गलत उपयोग के बीच का भेद जानने की उसमें योग्यता नहीं है । इसलिए उसे विज्ञान को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करने से बचना चाहिए ।

Quick Tip

काव्य की व्याख्या करते समय उसके प्रतीकात्मक अर्थ को समझने का प्रयास करें ।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मानव को किसके प्रति सचेत किया है ?

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मानव को विज्ञान के दुरुपयोग के प्रति सचेत किया है । उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया है कि यदि विज्ञान का उपयोग विवेक और नैतिकता के बिना किया जाएगा, तो यह मानवता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है । अतः विज्ञान का सदुपयोग आवश्यक है ।

Quick Tip

विज्ञान की प्रगति तभी सार्थक होती है जब उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए किया जाए, न कि विनाश के लिए ।

(iv) विज्ञान रूपी तलवार के सन्दर्भ में कवि ने क्या कहा है ?

उत्तर : कवि ने विज्ञान को एक तलवार के रूप में प्रस्तुत किया है, जो यदि सही हाथों में न हो तो वह विनाश का कारण बन सकती है । उन्होंने यह बताया है कि विज्ञान की शक्ति बहुत तीव्र और धारदार है, इसलिए इसे चलाने वाला व्यक्ति यदि नासमझ होगा, तो वह स्वयं अपने ही अंग काट बैठेगा । यह संकेत करता है कि विज्ञान का अंधाधुंध विकास और उसका अनुचित उपयोग समाज के लिए घातक हो सकता है ।

Quick Tip

विज्ञान के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को संतुलित करने के लिए नैतिकता और विवेक का होना आवश्यक है ।

(v) प्रस्तुत पद्यांश में प्रयुक्त रस एवं अलंकार का नाम लिखिए ।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में मुख्य रूप से शांत रस प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि इसमें मानव को जागरूक करने और संयमित होने की शिक्षा दी गई है। साथ ही, इसमें उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है, जहाँ विज्ञान की तुलना तलवार से की गई है। उदाहरण : - विज्ञान है तलवार (उपमा अलंकार)

Quick Tip

रस और अलंकार का सही विश्लेषण करने के लिए काव्य के भाव और शैली को गहराई से समझना आवश्यक होता है।

5.(क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

(i) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

उत्तर : कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 1906 ई. में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध निबंधकार, पत्रकार और समाज सुधारक थे। उनकी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं और राष्ट्रप्रेम की गहरी झलक मिलती है। वे गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे और सत्य, अहिंसा, और समाज सुधार पर विशेष ध्यान देते थे।

उनकी भाषा-शैली सरल, सहज और प्रभावशाली थी। वे सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं को व्यंग्यात्मक और विश्लेषणात्मक शैली में प्रस्तुत करते थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'जीवन के संकेत', 'बोलने वाली चुप', 'तिरवेणी', 'अनुभूति के दीप', 'मेरे लेख' आदि हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना का विशेष महत्व रहा है।

वे केवल निबंधकार ही नहीं, बल्कि हिंदी पत्रकारिता के भी एक प्रमुख स्तंभ थे। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया। उनके निबंधों में तर्कशीलता, भावनात्मकता और व्यंग्य का सुंदर संयोजन मिलता है। 1975 ई. में उनका निधन हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी हिंदी साहित्य जगत में प्रासंगिक बनी हुई हैं।

Quick Tip

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' की निबंध शैली तर्क, व्यंग्य और सामाजिक जागरूकता से परिपूर्ण होती थी, जिससे पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देती है।

(ii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी

उत्तर : प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान, लेखक और आलोचक थे। उनका जन्म दक्षिण भारत में हुआ था, लेकिन उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए और कई शोधपूर्ण ग्रंथों की रचना की।

उनकी भाषा-शैली विद्वत्तापूर्ण, तार्किक और स्पष्ट थी। वे हिंदी आलोचना साहित्य में आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाने वाले प्रमुख साहित्यकारों में से एक थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'हिंदी साहित्य का विकास',

'आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ', 'काव्यशास्त्र और साहित्य' आदि हैं।

वे एक कुशल अध्यापक भी थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गहन शोध किया और छात्रों को साहित्य की समृद्धि और महत्त्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शोध-परक ग्रंथ साहित्यिक शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य के आलोचना क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया और भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

Quick Tip

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी ने हिंदी साहित्य की आलोचना और शोध क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया, जिससे हिंदी साहित्य को वैज्ञानिक दृष्टिकोण मिला।

(iii) हरिशंकर परसाई

उत्तर : हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में हुआ था। वे हिंदी व्यंग्य साहित्य के जनक माने जाते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड, रूढ़िवादिता और अन्याय पर करारा प्रहार किया। उनकी लेखनी तीक्ष्ण, तर्कपूर्ण और हास्य से भरपूर थी, जो समाज को हँसते-हँसते गंभीर चिंतन के लिए प्रेरित करती थी। उनकी भाषा-शैली सरल, सहज और व्यंग्यात्मक थी। वे आम बोलचाल की भाषा में गंभीर सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करने में माहिर थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'रानी नागफनी की कहानी', 'तब की बात और थी', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'निठल्ले की डायरी', 'सदाचार का ताबीज' आदि हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा को एक नई पहचान दी और इसे एक प्रभावी साहित्यिक शैली के रूप में स्थापित किया। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक मुद्दों की सटीक व्याख्या करती हैं और पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देती हैं। 1995 में उनका निधन हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य में अमर हैं।

Quick Tip

हरिशंकर परसाई की रचनाएँ सामाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक हँसते-हँसते गहरी सोच में पड़ जाते हैं।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए : (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

उत्तर : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को वाराणसी में हुआ था। उन्हें हिंदी नवजागरण का अग्रदूत कहा जाता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को आधुनिक दिशा प्रदान की और सामाजिक जागरूकता पर जोर दिया। वे कवि, नाटककार, निबंधकार और संपादक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम

से भारतीय संस्कृति, सामाजिक सुधार और देशप्रेम को अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

राष्ट्रीयता – उनकी रचनाएँ देशभक्ति और सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत थीं।

भाषा-शैली – सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग।

नाटक और गद्य साहित्य – हिंदी नाटक और गद्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान।

सामाजिक सुधार – उन्होंने नारी शिक्षा, स्वदेशी आंदोलन और समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई।

पत्रकारिता – उन्होंने 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 'कवि वचन सुधा' पत्रिकाओं का संपादन किया।

लोकप्रिय रचनाएँ – 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'नीलदेवी', 'प्रेम जं-जाल' आदि।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिंदी भाषा को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया और हिंदी गद्य को एक सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। वे समाज सुधारक भी थे, जिन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अपने लेखन को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया। उनका निधन 6 जनवरी 1885 को हुआ, लेकिन हिंदी साहित्य में उनका योगदान अमर है।

Quick Tip

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिंदी गद्य का जनक और आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है।

(ii)) महादेवी वर्मा

उत्तर : उत्तर : महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में हुआ था। वे हिंदी साहित्य की महान कवयित्री और छायावाद की प्रमुख स्तंभ थीं। उनकी कविताएँ संवेदनशीलता, करुणा और रहस्यवाद से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी चेतना, मानवीय संवेदना और आध्यात्मिकता को अभिव्यक्ति दी।

उनकी साहित्यिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

छायावादी कवयित्री – उनके काव्य में प्रकृति और करुणा का सुंदर चित्रण मिलता है।

नारी संवेदना – उनकी रचनाएँ नारी जीवन की समस्याओं और उनकी संवेदनशीलता को दर्शाती हैं।

भाषा-शैली – कोमल, गंभीर और काव्यात्मक भाषा का प्रयोग।

दार्शनिकता और रहस्यवाद – उनके काव्य में गहरी दार्शनिकता और आत्मानुभूति का भाव दिखाई देता है।

चित्रात्मकता – उनकी कविताओं में अत्यंत सजीव बिंबों और प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

गद्य साहित्य में योगदान – उन्होंने अपनी आत्मकथात्मक रचनाओं और संस्मरणों के माध्यम से हिंदी गद्य साहित्य को भी समृद्ध किया।

लोकप्रिय रचनाएँ – 'यामा', 'नीरजा', 'संध्यागीत', 'दीपशिखा', 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' आदि।

सम्मान और पुरस्कार – उन्हें 1934 में 'नीरजा' के लिए सेकसरिया पुरस्कार, 1956 में पद्म भूषण, 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

महादेवी वर्मा न केवल एक उत्कृष्ट कवयित्री थीं, बल्कि समाज सुधारक और शिक्षाविद भी थीं। वे प्र-

याग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या रहीं और उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। 11 सितंबर 1987 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य में आज भी जीवंत बनी हुई हैं।

Quick Tip

महादेवी वर्मा की कविताएँ हिंदी साहित्य में संवेदना, नारी चेतना और छायावाद का प्रतीक हैं। उन्होंने हिंदी गद्य साहित्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(iii) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उत्तर : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल 1865 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में हुआ था। वे द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। उनकी रचनाओं में सामाजिक जागरूकता, आदर्शवाद और नैतिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे हिंदी काव्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाले कवियों में से एक थे।

उनकी साहित्यिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि – उनकी कविताएँ आदर्शवाद, नैतिकता और राष्ट्रप्रेम पर आधारित हैं।

भाषा-शैली – संस्कृतनिष्ठ, ओजस्वी और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग।

छंदबद्धता – वे हिंदी में महाकाव्य रचनाएँ करने वाले प्रमुख कवियों में से एक थे।

नैतिकता और समाज सुधार – उनके काव्य में समाज सुधार और नैतिकता का विशेष महत्त्व था।

प्रेरणादायक काव्य – उनकी कविताएँ पाठकों को उच्च आदर्शों और नैतिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देती हैं।

प्रभावशाली उपमाएँ और अलंकार – उनकी कविताओं में उत्कृष्ट उपमाओं और अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

लोकप्रिय रचनाएँ – 'प्रिय प्रवास', 'वैदेही वनवास', 'रुक्मिणी परिणय', 'काव्य कल्पना', 'रस रसायन' आदि।

सम्मान और पुरस्कार – उन्हें 1937 में 'प्रिय प्रवास' के लिए मंगलाप्रसाद पारितोषिक पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह हिंदी में लिखा गया पहला महाकाव्य माना जाता है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने हिंदी काव्य को नई दिशा प्रदान की और आदर्शवाद तथा नैतिकता को प्रमुखता दी। उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। 16 मार्च 1947 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनका योगदान हिंदी साहित्य में अमर रहेगा।

Quick Tip

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने हिंदी साहित्य को काव्य के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और उन्हें हिंदी का पहला महाकाव्यकार माना जाता है।

6. 'पंचलाइट' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द)

उत्तर : 'पंचलाइट' कहानी का प्रमुख पात्र गोबर एक साधारण ग्रामीण युवक है, जिसकी सरलता, संकोच और प्रेम भरी भावनाएँ उसे विशेष बनाती हैं। वह शिक्षा से वंचित होते हुए भी बुद्धिमान और स्वाभिमानी है। गाँव की परंपराओं और मान्यताओं से बंधा होने के बावजूद वह अपने प्रेम को व्यक्त करने का साहस नहीं जुटा पाता। गोबर की सादगी और दृढ़ निश्चय उसे एक प्रामाणिक चरित्र बनाते हैं, जो सामाजिक परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपने स्वाभिमान को बनाए रखता है। उसकी मासूमियत और प्रयास उसे गाँव के अन्य युवकों से अलग करते हैं।

इसके अलावा, गोबर का चरित्र प्रेम और संकोच के द्वंद्व का प्रतीक है। वह अपने अंदर दबी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता, लेकिन उसकी भावनाओं की सच्चाई स्पष्ट रूप से झलकती है। पंचलाइट जलाने की उसकी क्षमता गाँव में उसकी प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर देती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सच्ची योग्यता और आत्मनिर्भरता ही व्यक्ति को सम्मान दिलाती है। गोबर की कहानी हमें आत्मविश्वास और अपने कौशल पर विश्वास बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

Quick Tip

गोबर का चरित्र ग्रामीण जीवन की मासूमियत, प्रेम और सामाजिक दबावों के बीच संतुलन बनाने की संघर्षशील प्रवृत्ति को दर्शाता है।

अथवा

कहानी तत्त्वों के आधार पर 'खून का रिश्ता' अथवा 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए। (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द)

उत्तर : 'लाटी' कहानी मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक संघर्ष का उत्कृष्ट चित्रण प्रस्तुत करती है। यह कहानी एक गरीब लेकिन आत्मसम्मान से भरपूर व्यक्ति की संघर्ष यात्रा को दर्शाती है। इसमें कथानक सरल किन्तु प्रभावशाली है, जो पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यंत यथार्थवादी है, जिससे वे वास्तविक जीवन के प्रतीक होते हैं। संवाद सहज एवं स्वाभाविक हैं, जो ग्रामीण परिवेश को जीवंत बनाते हैं। इस कहानी की प्रमुख विशेषता इसका संदेश है, जो संघर्ष और आत्मविश्वास की महत्ता को रेखांकित करता है।

इसके अलावा, 'लाटी' कहानी समाज में व्याप्त असमानताओं को उजागर करते हुए न्याय और संघर्ष की भावना को प्रबल करती है। यह कहानी पाठकों को सहानुभूति और आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाती है। लेखक की भाषा सरल और प्रभावशाली है, जिससे कहानी अधिक प्रभावशाली बनती है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कठिन परिस्थितियों में भी आत्मसम्मान और परिश्रम व्यक्ति को आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करते हैं।

Quick Tip

'लाटी' कहानी सामाजिक यथार्थ, संघर्ष और आत्मसम्मान के भाव को उजागर करती है, जो पाठकों को प्रेरणा देती है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्डकाव्य के एक प्रश्न का उत्तर लिखिए : (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द)

(क). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में कर्ण का चरित्र एक आदर्श वीर योद्धा के रूप में उभरता है, जो जन्म से ही सामाजिक तिरस्कार और संघर्षों का सामना करता है, लेकिन अपने साहस और निष्ठा से इतिहास में अमर हो जाता है ।

- **कर्ण का जन्म और संघर्ष :** कर्ण सूर्यपुत्र और कुंती का पुत्र था, लेकिन समाज में उसे सूतपुत्र कहकर अपमानित किया गया । जन्म से ही उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने कभी हार नहीं मानी ।
- **शिक्षा और पराक्रम :** गुरु परशुराम से धनुर्विद्या प्राप्त करने के बावजूद, उसे क्षत्रिय न होने के कारण श्राप मिला । फिर भी, उसने अपने पराक्रम और युद्धकौशल से सभी को प्रभावित किया ।
- **दुर्योधन की मित्रता और निष्ठा :** दुर्योधन ने कर्ण को अंगदेश का राजा बनाया, जिसके बाद वह सदैव उसके प्रति निष्ठावान रहा । उसने मित्रता को सबसे ऊपर रखा, यहाँ तक कि अपने वास्तविक कुल और परिवार को भी छोड़ दिया ।
- **कर्ण की दानवीरता :** कर्ण अपने संकल्पों का दृढ़ता से पालन करता था । वह इतना दानशील था कि युद्ध से पहले भी इंद्र को अपनी दिव्य कवच-कुंडल भेंट कर दिए ।
- **युद्ध और बलिदान :** महाभारत युद्ध में कर्ण ने अर्जुन का सामना किया । अनेक शत्रुओं और दुर्भाग्य के कारण अंततः वह अर्जुन के बाण से वीरगति को प्राप्त हुआ ।

कर्ण का चरित्र त्याग, निष्ठा और पराक्रम की मिसाल है । वह सामाजिक असमानता और अन्याय के विरुद्ध खड़ा रहने वाला योद्धा था, जो अंतिम क्षण तक अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करता रहा ।

Quick Tip

कर्ण का चरित्र संघर्ष, त्याग और अद्वितीय निष्ठा का प्रतीक है । 'रश्मिरथी' में उसका चित्रण वीरता और करुणा का संगम है ।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की घटना को संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग में महाभारत युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण और कर्ण के बीच एक महत्वपूर्ण संवाद होता है, जिसमें श्रीकृष्ण कर्ण को उसकी जन्मसत्यता बताते हैं और उसे पांडवों का साथ देने का प्रस्ताव रखते हैं ।

- **कृष्ण का प्रस्ताव :** श्रीकृष्ण कर्ण से कहते हैं कि वह कुंती का पुत्र और पांडवों का बड़ा भाई है । यदि वह पांडवों का साथ देता है, तो उसे राजगद्दी प्राप्त होगी ।
- **कर्ण का धर्मसंकट :** यह सुनकर कर्ण भावुक हो उठता है, लेकिन वह दुर्योधन के प्रति अपनी मित्रता और निष्ठा को नहीं छोड़ता । वह कहता है कि उसने जीवनभर सूतपुत्र का अपमान सहा है और अब वह अपने वचनों से पीछे नहीं हट सकता ।

- **स्वाभिमान और त्याग :** कर्ण ने अर्जुन से युद्ध करने का निश्चय किया, भले ही उसे अपने जीवन की आहुति क्यों न देनी पड़े। उसने व्यक्तिगत लाभ और भावनाओं को छोड़कर कर्तव्य का पालन किया।
- **कर्ण और कुंती का संवाद :** इसके पश्चात कुंती कर्ण से मिलकर उसे अपने पुत्र होने का आग्रह करती हैं, लेकिन कर्ण उन्हें वचन देता है कि वह अर्जुन को नहीं मारेगा, परंतु वह युद्ध अवश्य लड़ेगा।

तृतीय सर्ग कर्ण के चरित्र की महानता को दर्शाता है, जिसमें वह अपने सिद्धांतों और धर्म के प्रति अडिग रहता है। यह प्रसंग त्याग, निष्ठा और धर्म के प्रति समर्पण का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

Quick Tip

‘रश्मिर्थी’ के तृतीय सर्ग में कर्ण के धर्म और कर्तव्य के बीच के संघर्ष को दर्शाया गया है, जो उसे एक महान योद्धा और दानवीर बनाता है।

(ख). ‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : ‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य में श्रवण कुमार का चरित्र आदर्श भक्ति, सेवा और कर्तव्यपरायणता का प्रतीक है। वे माता-पिता के प्रति अटूट प्रेम और निष्ठा के प्रतीक हैं, जिन्होंने अपनी संपूर्ण जीवन यात्रा को उनकी सेवा में समर्पित कर दिया।

- **श्रवण कुमार की भक्ति :** श्रवण कुमार बचपन से ही अपने माता-पिता के प्रति अत्यंत श्रद्धालु और सेवा-भाव रखने वाले पुत्र थे। उन्होंने अपने नेत्रहीन माता-पिता की देखभाल को ही अपना परम धर्म माना।
- **कर्तव्यनिष्ठता :** उन्होंने अपने माता-पिता की इच्छाओं को सर्वोपरि रखा और उन्हें तीर्थ यात्रा कराने का संकल्प लिया, जिसे उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी निभाया।
- **संघर्ष और बलिदान :** मार्ग में राजा दशरथ के तीर से गलती से उनका वध हो गया, लेकिन मृत्यु के समय भी उन्होंने अपने माता-पिता की चिंता की और उनकी सेवा का भाव अंतिम क्षण तक बनाए रखा।
- **श्रवण कुमार का प्रभाव :** उनकी मृत्यु ने राजा दशरथ को गहरे दुःख में डाल दिया, जिससे आगे चलकर रामायण की कथा में महत्वपूर्ण मोड़ आया।

श्रवण कुमार का चरित्र भारतीय संस्कृति में माता-पिता की सेवा और त्याग की सर्वोच्च मिसाल है, जो आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक है।

Quick Tip

श्रवण कुमार का चरित्र भक्ति, त्याग और कर्तव्यनिष्ठता का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में पारिवारिक मूल्यों की महत्ता स्थापित होती है।

अथवा

‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर : ‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य भारतीय संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक रचना है, जिसमें माता-पिता के प्रति संतान के कर्तव्य को भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है ।

- **भक्ति और सेवा का आदर्श** : यह खण्डकाव्य माता-पिता की सेवा को सर्वोच्च धर्म मानने वाले श्रवण कुमार के जीवन पर आधारित है ।
- **संवेदनशील कथा** : कहानी अत्यंत भावनात्मक है, जो पाठकों को पुत्रधर्म, त्याग और बलिदान की महत्ता का अनुभव कराती है ।
- **नैतिक शिक्षा** : यह खण्डकाव्य समाज में बुजुर्गों के प्रति सम्मान और सेवा की भावना को प्रेरित करता है ।
- **काव्यशैली और भाषा** : खण्डकाव्य की भाषा सरल, प्रवाहमयी और हृदयस्पर्शी है, जो इसे सभी पाठकों के लिए सहज और प्रभावशाली बनाती है ।
- **समाज में प्रभाव** : यह काव्य पारिवारिक मूल्यों और निस्वार्थ प्रेम का संदेश देता है, जो आज भी प्रासंगिक है ।

‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य भारतीय समाज में आदर्श पुत्र धर्म की महत्ता को स्थापित करता है और नैतिक शिक्षा का संदेश देता है ।

Quick Tip

‘श्रवण कुमार’ खण्डकाव्य माता-पिता की सेवा और निस्वार्थ प्रेम का प्रतीक है, जो आज भी समाज को पारिवारिक मूल्यों का पाठ पढ़ाता है ।

(ग). ‘आलोक - वृत्त’ खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : ‘आलोक-वृत्त’ खण्डकाव्य में प्रमुख पात्र एक आदर्शवादी व्यक्तित्व का प्रतीक है, जो न्याय, सत्य और कर्तव्य के प्रति अडिग रहता है । वह सामाजिक बुराइयों का विरोध करता है और अपने आदर्शों पर दृढ़ रहता है ।

- **न्यायप्रियता और सत्यनिष्ठा** : इस पात्र में सत्य और न्याय की अद्भुत शक्ति है, जो उसे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है । वह समाज में व्याप्त अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करता है ।
- **कर्तव्यपरायणता और नेतृत्व क्षमता** : वह समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता है और एक आदर्श नेता के रूप में उभरता है, जो दूसरों को भी प्रेरित करता है ।
- **संघर्षशील और धैर्यवान** : विपरीत परिस्थितियों में भी वह अपने मार्ग से विचलित नहीं होता । उसका संघर्ष और धैर्य उसे समाज में एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाते हैं ।

- **आत्मबल और दृढ़ निश्चय :** यह पात्र आत्मबल और आत्मसम्मान से भरपूर है, जो कठिनाइयों के बावजूद अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का साहस रखता है ।

यह चरित्र समाज में एक आदर्श स्थापित करता है और प्रेरणा देता है कि सत्य, न्याय और कर्तव्यनिष्ठा के मार्ग पर चलते हुए भी सफलता प्राप्त की जा सकती है ।

Quick Tip

'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य का प्रमुख पात्र आत्मबल, न्यायप्रियता और कर्तव्यपरायणता का प्रतीक है, जो समाज के लिए प्रेरणादायक है ।

अथवा

‘आलोक-वृत्त’ खण्डकाव्य के ‘चतुर्थ सर्ग’ की घटना को संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : ‘आलोक-वृत्त’ खण्डकाव्य का चतुर्थ सर्ग संघर्ष, न्याय और सत्य की विजय का प्रतीक है । इसमें समाज में व्याप्त अन्याय के विरुद्ध नायक का दृढ़ संकल्प और उसकी विजय का वर्णन किया गया है ।

- **संघर्ष का चरम बिंदु :** इस सर्ग में नायक समाज में व्याप्त बुराइयों और अन्याय के विरुद्ध खुलकर संघर्ष करता है ।
- **धर्म और कर्तव्य का पालन :** वह अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है और समाज को सही दिशा में ले जाने का प्रयास करता है ।
- **सत्य की विजय :** अंततः सत्य की विजय होती है और नायक समाज में एक नई रोशनी फैलाने का कार्य करता है, जिससे समाज में एक नई चेतना का संचार होता है ।
- **प्रेरणादायक संदेश :** यह सर्ग पाठकों को संघर्ष, कर्तव्य और सत्य की महत्ता का संदेश देता है और समाज को सुधारने की प्रेरणा प्रदान करता है ।

चतुर्थ सर्ग समाज में सुधार की भावना को दर्शाता है, जहाँ नायक अपने संघर्ष और आत्मबल से बुराइयों पर विजय प्राप्त करता है ।

Quick Tip

'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य का चतुर्थ सर्ग सत्य, संघर्ष और समाज सुधार की भावना को उजागर करता है, जिससे समाज में नई चेतना का संचार होता है ।

(घ). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का नायक एक अदम्य साहस, देशभक्ति और संघर्षशीलता का प्रतीक है । वह समाज और राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देता है ।

- **देशभक्तिपूर्ण व्यक्तित्व :** नायक अपने देश के प्रति गहरी निष्ठा रखता है और उसकी स्वतंत्रता के लिए हर संभव बलिदान देने को तैयार रहता है ।
- **संघर्षशील और आत्मबलिदानी :** उसका जीवन कठिन संघर्षों से भरा है, लेकिन वह कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता । वह न्याय और स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने को तत्पर रहता है ।
- **नेतृत्व क्षमता और प्रेरणा स्रोत :** वह समाज को जागरूक करने का कार्य करता है और अन्य लोगों को भी स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है ।
- **आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों से युक्त :** नायक केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और आदर्शों का पालन करने वाला व्यक्ति भी है, जो आत्मसम्मान और नैतिकता को सर्वोपरि रखता है ।

यह नायक समाज और राष्ट्र के लिए एक प्रेरणास्रोत बनता है और अपने त्याग और संघर्ष से सभी को प्रेरित करता है ।

Quick Tip

'मुक्तियज्ञ' का नायक केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि आत्मबलिदान, साहस और देशभक्ति का प्रतीक है, जो राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देता है ।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य स्वतंत्रता संग्राम की गौरवगाथा का वर्णन करता है, जिसमें नायक का संघर्ष, बलिदान और देशभक्ति मुख्य घटनाओं के रूप में उभरते हैं ।

- **स्वतंत्रता की भावना का जागरण :** प्रारंभ में नायक समाज को स्वतंत्रता की महत्ता का बोध कराता है और लोगों को जागरूक करने का कार्य करता है ।
- **संघर्ष और क्रांति :** नायक अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है और समाज में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित करता है ।
- **बलिदान और वीरगति :** अंततः नायक देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देता है, जिससे वह अमर हो जाता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनता है ।
- **समाज पर प्रभाव :** नायक के बलिदान के बाद समाज में स्वतंत्रता और न्याय की अलख जगती है, जिससे राष्ट्रीय एकता और संकल्प मजबूत होते हैं ।

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की घटनाएँ राष्ट्र प्रेम, संघर्ष और आत्मबलिदान की भावना को जागृत करती हैं और पाठकों को देशभक्ति का संदेश देती हैं ।

Quick Tip

'मुक्तियज्ञ' की प्रमुख घटनाएँ स्वतंत्रता संग्राम की महिमा, संघर्ष और बलिदान को उजागर करती हैं, जो प्रत्येक भारतीय को प्रेरणा प्रदान करती हैं।

(ड). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर: 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का प्रमुख पात्र सत्य, न्याय और धर्म का प्रतीक है। वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों से समझौता नहीं करता और अन्याय के विरुद्ध अडिग रहता है।

- **सत्यनिष्ठ और धर्मपरायण**: यह पात्र सदैव सत्य और धर्म के मार्ग पर चलता है और अपने सिद्धांतों का पालन करता है, चाहे उसे कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े।
- **संघर्षशील और निर्भीक**: वह अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है और कभी अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटता। उसकी निडरता उसे समाज में एक आदर्श व्यक्तित्व बनाती है।
- **मानवीय संवेदनाओं से भरपूर**: इस पात्र में करुणा और सहानुभूति की भावना है। वह समाज के पीड़ितों की सहायता करता है और उनके हक के लिए लड़ता है।
- **विजयी व्यक्तित्व**: सत्य के मार्ग पर चलकर अंततः उसे विजय प्राप्त होती है, जिससे यह सिद्ध होता है कि सत्य की हमेशा जीत होती है।

यह पात्र समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है और यह संदेश देता है कि सत्य और न्याय का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन अंततः उसकी विजय अवश्य होती है।

Quick Tip

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का नायक सत्य, न्याय और आदर्शवाद का प्रतीक है, जो यह सिद्ध करता है कि सत्य की हमेशा विजय होती है।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में सत्य, संघर्ष और विजय की भावना को उजागर करने वाली प्रमुख घटनाएँ वर्णित हैं। यह काव्य सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति की कठिनाइयों और उसकी विजय की प्रेरणादायक गाथा प्रस्तुत करता है।

- **अन्याय और असत्य का प्रभाव**: प्रारंभ में समाज में असत्य और अन्याय का बोलबाला होता है, जिससे लोग भयभीत और पीड़ित होते हैं।
- **सत्य का उदय और संघर्ष**: नायक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है और सत्य की रक्षा के लिए संघर्ष करता है, जिससे समाज में जागृति आती है।

- **विपत्तियों का सामना :** सत्य के मार्ग पर चलते हुए नायक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं होता ।
- **सत्य की विजय :** अंततः सत्य और न्याय की जीत होती है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि सत्य कभी पराजित नहीं होता और असत्य अधिक समय तक नहीं टिकता ।

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य हमें यह प्रेरणा देता है कि सत्य का मार्ग कठिन अवश्य होता है, लेकिन अंततः विजय उसी की होती है ।

Quick Tip

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि सत्य के मार्ग पर चलने वाले को कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं, लेकिन अंततः उसकी विजय सुनिश्चित होती है ।

(च). 'त्यागपथी' की प्रमुख घटनाओं को संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'त्यागपथी' खण्डकाव्य में त्याग, सेवा और कर्तव्यपरायणता को प्रमुखता दी गई है । इस काव्य की प्रमुख घटनाएँ त्याग और आत्मबलिदान की भावना को दर्शाती हैं ।

- **नायक का परिचय और प्रेरणा :** नायक समाज के कल्याण के लिए समर्पित होता है । वह भोग-विलास को त्यागकर सेवा-पथ को अपनाने का निश्चय करता है ।
- **संघर्ष और सेवा :** नायक समाज के दबे-कुचले वर्ग की सहायता करता है और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है । उसकी निःस्वार्थ सेवा से समाज में जागरूकता आती है ।
- **प्रलोभनों का सामना :** नायक को कई बाधाओं और प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह सत्य और कर्तव्य की राह नहीं छोड़ता ।
- **त्याग और विजय :** अंततः नायक अपने उद्देश्य में सफल होता है और समाज में बदलाव लाता है । उसका त्याग लोगों के लिए प्रेरणादायक बन जाता है ।

'त्यागपथी' खण्डकाव्य का मूल संदेश यह है कि सच्ची सेवा और त्याग से ही समाज का उत्थान संभव है ।

Quick Tip

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की घटनाएँ त्याग, संघर्ष और सेवा के आदर्श को स्थापित करती हैं, जिससे पाठकों को प्रेरणा मिलती है ।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए ।

उत्तर : 'त्यागपथी' खण्डकाव्य का नायक एक त्यागमयी और सेवाभावी व्यक्तित्व का प्रतीक है। वह निःस्वार्थ रूप से समाज की सेवा करता है और अपने आदर्शों पर अडिग रहता है।

- निःस्वार्थ सेवा भाव : नायक समाज के कल्याण के लिए कार्य करता है और अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग कर देता है।
- साहस और दृढ़ निश्चय : विपरीत परिस्थितियों में भी वह अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता और समाज को सुधारने के लिए हर संभव प्रयास करता है।
- त्याग और तपस्या : वह सांसारिक मोह-माया को त्यागकर दूसरों की भलाई में अपने जीवन को समर्पित करता है।
- समाज में बदलाव का प्रेरक : उसकी निष्ठा और सेवा भावना समाज में बदलाव लाती है और लोगों को सच्चे जीवन मूल्यों की ओर प्रेरित करती है।

'त्यागपथी' का नायक एक आदर्श समाज सुधारक के रूप में उभरता है, जो यह संदेश देता है कि त्याग और सेवा ही सच्ची महानता का मार्ग है।

Quick Tip

'त्यागपथी' खण्डकाव्य का नायक त्याग, सेवा और आत्मबलिदान का प्रतीक है, जो समाज को सच्चे जीवन मूल्यों का पाठ पढ़ाता है।

1 (खण्ड ख)

8.(क) निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
संस्कृत साहित्यस्य आदिकविः 'वाल्मीकिः, महर्षि व्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास - भारवि भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुष्ठुक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।

उत्तर : संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास तथा अन्य महाकवि जैसे भास, भारवि और भवभूति अपने ग्रंथों के माध्यम से आज भी पाठकों के हृदय में बसे हुए हैं। यह भाषा हमारी मातृभाषा के समान सम्माननीय और वंदनीय है, क्योंकि भारत माता की स्वतंत्रता, गौरव, अखंडता और सांस्कृतिक एकता को संस्कृत भाषा के माध्यम से ही सुरक्षित रखा जा सकता है। संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ मानी जाती है। अतः यह उचित रूप से कहा गया है कि 'भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य भाषा गीर्वाणभारती (संस्कृत) ही है।'

Quick Tip

संस्कृत भाषा केवल एक प्राचीन भाषा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और साहित्य की आत्मा भी है, जिसे हमें संरक्षित और सम्मानित करना चाहिए।

अथवा

यदा अयं षोडशवर्षदेशीयः आसीत् तदास्य कनीयसी भगिनी - विषूचिकया पञ्चत्वं गता । वर्षत्रयानन्तरमस्य पितृव्योऽपि दिवंगतः । द्वयोरनयो मृत्युं दृष्ट्वा आसीदस्य मनसि - कथमहं कथं वायं लोकः मृत्युभयात् मुक्तः स्यादिति चिन्तयतः एवास्य हृदि सहसैव वैराग्यप्रदीपः प्रज्वलितः । एकस्मिन् दिवसे अस्तगते भगवति भास्वति मूलशङ्करः गृहमत्यजत् ।

उत्तर : जब यह बालक सोलह वर्ष का था, तब इसकी छोटी बहन हैजा (विषूचिका) से पीड़ित होकर इस संसार से विदा हो गई । तीन वर्षों के बाद इसके चाचा (पितृव्य) भी दिवंगत हो गए । इन दोनों की मृत्यु देखकर इसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं और यह समस्त संसार मृत्यु के भय से मुक्त कैसे हो सकते हैं ? इसी चिंतन के दौरान इसके हृदय में वैराग्य (संन्यास) की ज्योति प्रज्वलित हो उठी । एक दिन जब सूर्य अस्त हो गया, तब मूलशंकर ने अपना घर त्याग दिया ।

Quick Tip

यह संस्कृत गद्यांश महापुरुषों के वैराग्य और संन्यास की प्रेरणा को दर्शाता है, जो आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर अग्रसर होने की भावना को प्रकट करता है ।

8. (ख) निम्नलिखित संस्कृत श्लोकों में से किसी एक का सन्दर्भ - सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :
विधा विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

उत्तर : दुष्ट व्यक्ति (खल) विद्या का उपयोग केवल वाद-विवाद करने के लिए करता है, धन को अहंकार बढ़ाने का साधन मानता है, और शक्ति का प्रयोग दूसरों को कष्ट देने के लिए करता है । इसके विपरीत, सज्जन व्यक्ति (साधु) विद्या को ज्ञान प्राप्त करने के लिए, धन को दान करने के लिए और शक्ति का उपयोग दूसरों की रक्षा करने के लिए करता है ।

यह श्लोक इस तथ्य को दर्शाता है कि गुणों और संसाधनों का उपयोग व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करता है । दुष्ट व्यक्ति अपने गुणों का दुरुपयोग करता है, जबकि सज्जन व्यक्ति उनका सही और कल्याणकारी उपयोग करता है ।

Quick Tip

इस श्लोक का संदेश यह है कि विद्या, धन और शक्ति का उपयोग सदैव सही उद्देश्य के लिए करना चाहिए, न कि अहंकार और परपीड़ा के लिए ।

अथवा

प्रहरति यदि युद्धे मारुतो भीमरूपी
प्रहरति यदि साक्षात्पार्थरूपेण शक्रः ।
परुषवचनदक्षः त्ववचोभिर्न दास्ये
तृणमपि पितृभुक्ते वीर्यगुप्ते स्वराज्ये ॥

उत्तर : यदि युद्ध में स्वयं वायुदेव के पुत्र भीमसेन प्रहार करें या स्वयं देवराज इन्द्र अर्जुन के रूप में आकर मुझ पर आघात करें, तब भी मैं अपने पितरों द्वारा उपभुक्त और पराक्रम से सुरक्षित स्वराज्य का एक तिनका भी कठोर वचनों के प्रभाव से किसी को नहीं दूँगा ।

यह श्लोक स्वाभिमान और राष्ट्र प्रेम को दर्शाता है । वक्ता यह स्पष्ट कर रहा है कि चाहे कितने भी बलवान योद्धा उसे पराजित करने का प्रयास करें, वह अपने पितृ-परंपरा से प्राप्त और वीरता से सुरक्षित राज्य को केवल वचनों के आधार पर नहीं त्यागेगा । यह आत्मसम्मान और दृढ़ निश्चय का प्रतीक है ।

Quick Tip

यह श्लोक राष्ट्र और सम्मान की रक्षा के प्रति अडिग संकल्प को दर्शाता है, जिसमें यह संदेश निहित है कि स्वाभिमान से प्राप्त धरोहर को केवल शब्दों के प्रभाव में आकर नहीं त्यागना चाहिए ।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए :

(i) ब्राह्मणस्य पत्नी कथं दुःखिनी आसीत् ?

उत्तर : ब्राह्मणस्य पत्नी दुःखिनी आसीत् यतः सा गरीबीपीडिता आसीत् । सा नित्यं दैन्यजीवनं यापयति स्म । अपि च, पतिः यदा भिक्षाटनाय गच्छति स्म, तदा सा गृहे एकाकिनी दुःखमनुभवति स्म । तथा च सा निर्धनतया कष्टं सहनं कृत्वा जीवनं यापनं कृत्वान् ।

Quick Tip

ब्राह्मणस्य पत्नी गरीबी, अकेलापनं च अनुभवति स्म, अतः सा दुःखिनी आसीत् ।

(ii) वित्तेन कस्य आशा न अस्ति ?

उत्तर : वित्तेन सर्वस्य अपि आशा अस्ति । धनस्य लोभः मनुष्याणां हृदयं व्याप्नोति । धनं प्राप्तुं नृपः, वणिजः, सेवकः, अपि च विद्वान् अपि प्रयत्नं कुर्वन्ति । किन्तु संतुष्टः पुरुषः एव वित्तस्य लोभेन विमुक्तः भवति । अतः केवलं संतुष्टस्य मनुष्यस्य वित्ते आशा न अस्ति ।

Quick Tip

लोके सर्वे धनं इच्छन्ति, किन्तु केवलं संतुष्टः पुरुषः वित्ते आशां न करोति ।

(iii) उलूकस्य विरोधं केन अकरोत् ?

उत्तर : उलूकस्य विरोधं काकेन अकरोत् । काकः दिवा गच्छति, किन्तु उलूकः रात्रौ विचरति । उभयोः स्वभावः भिन्नः आसीत् । काकः प्रकाशं प्रियं मन्यते, किन्तु उलूकः तमः । तस्मात् काकः उलूकस्य स्वभावं न अङ्गीचक्रे । अतः, काकः उलूकस्य विरोधं कृतवान् ।

Quick Tip

काकः एवं उलूकः प्रतीकात्मक रूपेण प्रकाश एवं अन्धकारस्य विरोधं दर्शयतः ।

(iv) दयानन्दस्य भगिनी कथं पञ्चत्वं गता ?

उत्तर : दयानन्दस्य भगिनी विषूचिकया पीडिता आसीत् । सा दीर्घकालं व्याधिना यातना अनुभूय, अन्ते पञ्चत्वं गता । तस्याः मृत्युं दृष्ट्वा, दयानन्दः गम्भीरं वैराग्यं अनुभवत् । एषा घटना तस्य संन्यासग्रहणस्य कारणमभवत् ।

Quick Tip

दयानन्दस्य भगिनी विषूचिकया ग्रस्त्वा मृत्युं प्राप्तवती, ततः एव तस्य मनसि वैराग्यं प्रबुद्धमभवत् ।

10. (क) 'शृंगार रस' अथवा 'वीभत्स रस' की परिभाषा लिखकर उसका उदाहरण दीजिए ।

उत्तर :

शृंगार रस : शृंगार रस प्रेम, सौंदर्य और आकर्षण को दर्शाने वाला रस है । यह मुख्यतः 'रति' भाव से उत्पन्न होता है । इसका स्थायी भाव 'रति' होता है और यह विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों द्वारा पुष्ट होता है ।

उदाहरण : कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात । भरे भवन में करत हैं, नैनन ही सों बात ॥ (इस दोहे में नायक-नायिका के नेत्रों के संकेत से होने वाली शृंगारिक चेष्टाओं का वर्णन किया गया है ।)

वीभत्स रस : वीभत्स रस घृणा, जुगुप्सा और विकार उत्पन्न करने वाला रस है । इसका स्थायी भाव 'जुगुप्सा' होता है और यह विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों द्वारा अभिव्यक्त होता है ।

उदाहरण : रुधिर बहत चहुँ ओर, कटे मस्तक गिरत धरा पर । शव सड़त दुर्गंध उठत, जड़ मन घृणा भरत भीतर ॥ (इस दोहे में युद्ध के भयावह दृश्य और वीभत्सता का चित्रण किया गया है ।)

Quick Tip

श्रृंगार रस में प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति होती है, जबकि वीभत्स रस में घृणा और जुगुप्सा की भावना व्यक्त की जाती है।

(ख) 'यमक' अलंकार अथवा 'उपमा' अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर:

यमक अलंकार : जिस काव्य में एक ही शब्द दो बार प्रयुक्त होकर भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करे, उसे यमक अलंकार कहते हैं।

उदाहरण : चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल थल में। (इसमें 'जल' का अर्थ पानी और 'थल' का अर्थ भूमि है, जिससे यमक अलंकार बनता है।)

उपमा अलंकार : जब किसी वस्तु या व्यक्ति की किसी अन्य से तुलना उपमेय और उपमान के माध्यम से की जाती है, तो उसे उपमा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण : वह बालक सिंह के समान साहसी है। (इसमें 'बालक' को 'सिंह' के समान बताया गया है, जिससे उपमा अलंकार बनता है।)

Quick Tip

यमक अलंकार में एक ही शब्द के दो अलग-अलग अर्थ होते हैं, जबकि उपमा अलंकार में किसी वस्तु की तुलना किसी अन्य से की जाती है।

(ग) 'दोहा' छंद अथवा 'कुण्डलिया' छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर:

दोहा छंद : दोहा छंद हिंदी कविता का अत्यंत प्रसिद्ध छंद है, जिसमें प्रत्येक पंक्ति 13-11 मात्राओं की होती है। इसमें चार चरण होते हैं और तुकांत पहले और तीसरे चरण में समान होते हैं।

उदाहरण : संत न छोड़ें संतई, जो लाख करे अपराध। कदली सीप भुजंगमुख, स्वभाव न त्यागै साध ॥ (इस दोहे में बताया गया है कि संत कभी भी अपनी संत प्रकृति नहीं छोड़ते, चाहे कोई उनके साथ कितनी भी बुराई करे।)

कुण्डलिया छंद : कुण्डलिया छंद दोहा और रोला छंद के संयोग से बनता है। इसकी विशेषता यह है कि पहले दोहे की अंतिम पंक्ति ही रोला की पहली पंक्ति बनती है, जिससे यह कुण्डली के समान दिखाई देता है।

उदाहरण : मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। मन के जीते जीत, जगत में यही प्रमाण। कर्म करे इंसान, मिले उसके परिणाम ॥ (इस कुण्डलिया छंद में मनोबल की महत्ता को दर्शाया गया है।)

दोहा छंद 13-11 मात्राओं का होता है, जबकि कुण्डलिया छंद दोहा और रोला का मिश्रण होता है।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

(i) साहित्य समाज का दर्पण है।

उत्तर :

प्रस्तावना : साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है क्योंकि यह समाज के विचारों, भावनाओं, संस्कारों, परंपराओं और समस्याओं को प्रतिबिंबित करता है। साहित्यकार अपने समय की परिस्थितियों, सामाजिक बदलावों और मानवीय भावनाओं को अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। साहित्य न केवल समाज की वास्तविकता को उजागर करता है, बल्कि उसमें सुधार लाने के लिए भी प्रेरित करता है।

साहित्य और समाज : साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज का मार्गदर्शन भी करता है। यह व्यक्ति को सोचने, समझने और आत्मविश्लेषण करने की प्रेरणा देता है। साहित्य समाज की अच्छाइयों को सराहता है और बुराइयों को उजागर कर उसे सुधारने का प्रयास करता है। चाहे वह किसी भी भाषा या युग का हो, साहित्य हमेशा मानव सभ्यता के उत्थान और पतन का साक्षी रहा है।

साहित्य के विविध रूप : साहित्य विभिन्न रूपों में समाज का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। गद्य, पद्य, नाटक, कहानियाँ, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण, निबंध आदि के माध्यम से साहित्यकार अपने समय के समाज की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय समाज की तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाया गया है, वहीं महादेवी वर्मा की कविताएँ स्त्री चेतना को जागृत करती हैं।

साहित्य और सामाजिक सुधार : साहित्य समाज में सुधार लाने का भी कार्य करता है। हिंदी साहित्य में कबीर, तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों ने समाज को नैतिकता, भक्ति और मानवता का संदेश दिया। आधुनिक युग में प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा, और मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों ने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। साहित्य ने समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे जातिवाद, सामंतवाद, शोषण, गरीबी और लैंगिक असमानता के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साहित्य और यथार्थ : साहित्य केवल कल्पना का संसार नहीं होता, बल्कि यह यथार्थ को भी उतनी ही गहराई से चित्रित करता है। कई साहित्यिक रचनाएँ हमें ऐतिहासिक घटनाओं, राजनीतिक परिस्थितियों और सामाजिक परिवर्तनों से अवगत कराती हैं। प्रेमचंद की कहानियाँ किसान और मजदूर वर्ग की दुर्दशा को दर्शाती हैं, जबकि निराला की कविताएँ भारतीय समाज में व्याप्त विषमताओं को उजागर करती हैं।

निष्कर्ष : साहित्य समाज का एक सच्चा दर्पण है, जो समय-समय पर समाज की अच्छाइयों और बुराइयों को उजागर करता है। यह समाज को सही दिशा देने, नैतिक मूल्यों को बनाए रखने और भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य न केवल अतीत को संजोता है, बल्कि वर्तमान को दिशा देता है और भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए, हमें साहित्य को महत्व देना चाहिए और समाज के उत्थान में इसकी भूमिका को स्वीकार करना चाहिए।

Quick Tip

साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का सच्चा मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत है, जो हमें अतीत, वर्तमान और भविष्य से जोड़ता है।

(ii) राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की भूमिका।

उत्तर :

प्रस्तावना : युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। वे देश के भविष्य निर्माता होते हैं, जिन पर राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि निर्भर करती है। उनके जोश, उत्साह, और कर्मठता के बल पर राष्ट्र को एक नई दिशा और ऊँचाइयाँ प्राप्त होती हैं। यदि युवा अपने कर्तव्यों और दायित्वों को समझें, तो राष्ट्र का तेज़ी से विकास संभव है।

युवाओं की विशेषताएँ : युवा पीढ़ी में असीम ऊर्जा, नवीन सोच, साहस और संघर्षशीलता होती है। वे समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखते हैं। वे किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, चाहे वह विज्ञान हो, राजनीति हो, शिक्षा हो या समाज सेवा। उनका मानसिक और शारीरिक बल राष्ट्र निर्माण में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षा और युवाओं की भूमिका : शिक्षा किसी भी देश की सबसे बड़ी संपत्ति होती है और युवा उसकी धरोहर होते हैं। सुशिक्षित युवा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कला, और खेल-कूद में उन्नति करके युवा देश को सशक्त बना सकते हैं। शिक्षित युवा समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अज्ञानता को दूर करने में सहायक होते हैं।

राष्ट्र की प्रगति में युवाओं की भूमिका : युवा विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करके राष्ट्र को समृद्ध बना सकते हैं—

- **राजनीति में भागीदारी :** नैतिकता और ईमानदारी के साथ राजनीति में प्रवेश कर वे एक आदर्श शासन प्रणाली स्थापित कर सकते हैं।
- **सामाजिक सुधार :** वे समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और स्वच्छता से जुड़े मुद्दों पर कार्य कर सकते हैं।
- **आर्थिक विकास :** नए स्टार्टअप और व्यवसाय के माध्यम से युवा आर्थिक प्रगति में योगदान कर सकते हैं।
- **रक्षा और सुरक्षा :** सेना, पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों में योगदान देकर वे देश की रक्षा कर सकते हैं।

युवाओं के समक्ष चुनौतियाँ : युवाओं के सामने कई चुनौतियाँ होती हैं, जैसे बेरोजगारी, नशा, भ्रष्टाचार, और गलत दिशा में जाने का खतरा। यदि वे अपने मार्ग पर दृढ़ रहें, तो वे इन सभी चुनौतियों को पार करके राष्ट्र की प्रगति में सहयोग कर सकते हैं।

निष्कर्ष : राष्ट्र की उन्नति में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि वे अपने कर्तव्यों को समझें और सही दिशा में कार्य करें, तो देश को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं। हमें युवाओं को शिक्षित, सशक्त और प्रेरित करना चाहिए, ताकि वे अपने राष्ट्र को विश्व में अग्रणी बना सकें।

(iii) आतंकवाद - मानवता के विकास में बाधक ।

उत्तर :

प्रस्तावना : आतंकवाद आज की दुनिया की सबसे गंभीर समस्या है, जो मानवता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बन चुका है । यह न केवल निर्दोष लोगों के जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि समाज में भय और असुरक्षा का वातावरण भी उत्पन्न करता है । आतंकवाद का स्वरूप समय के साथ बदलता रहा है, परंतु इसका मूल उद्देश्य समाज में अशांति और भय फैलाना ही रहा है । यह समस्या केवल किसी एक देश तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक संकट बन चुकी है ।

आतंकवाद के कारण : आतंकवाद के अनेक कारण हो सकते हैं, जो राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कारकों से जुड़े होते हैं । कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :

- **धार्मिक कट्टरता :** कुछ आतंकी संगठन धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह करते हैं और हिंसा फैलाते हैं ।
- **राजनीतिक अस्थिरता :** जब किसी देश की राजनीतिक स्थिति अस्थिर होती है, तब आतंकी संगठन वहाँ अपनी जड़ें मजबूत करने लगते हैं ।
- **आर्थिक असमानता :** बेरोजगारी और गरीबी के कारण युवा वर्ग आतंकवाद की ओर आकर्षित हो सकता है ।
- **अशिक्षा और अज्ञानता :** अशिक्षित और गुमराह युवाओं को आतंकवादी संगठन आसानी से अपने पक्ष में कर लेते हैं ।
- **अंतरराष्ट्रीय साजिशें :** कई बार आतंकवाद को बढ़ावा देने के पीछे वैश्विक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय शक्तियों की भूमिका भी होती है ।

आतंकवाद के प्रभाव : आतंकवाद का प्रभाव न केवल किसी देश की आंतरिक शांति को भंग करता है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी गंभीर परिणाम उत्पन्न करता है । इसके प्रभाव निम्नलिखित हैं :

- निर्दोष लोगों की हत्या और समाज में भय का माहौल ।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव ।
- देशों के बीच आपसी तनाव और युद्ध जैसी स्थिति ।
- विकास कार्यों में बाधा और संसाधनों की बर्बादी ।
- सामाजिक और सांस्कृतिक सौहार्द को नुकसान ।

आतंकवाद रोकने के उपाय : आतंकवाद को समाप्त करने के लिए केवल सरकार की भूमिका पर्याप्त नहीं होती, बल्कि इसमें नागरिकों, सुरक्षा एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । कुछ प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं :

- **शिक्षा और जागरूकता :** युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देकर उन्हें आतंकवाद से दूर रखा जा सकता है ।

- **आर्थिक सुधार :** गरीबी और बेरोजगारी को दूर करके आतंकवाद के लिए उपजाऊ वातावरण को खत्म किया जा सकता है ।
- **सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना :** देश की सुरक्षा एजेंसियों को अधिक सशक्त बनाया जाना चाहिए ।
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग :** विभिन्न देशों को आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर कार्य करना चाहिए ।
- **सख्त कानून :** आतंकवादियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने के लिए प्रभावी कानूनी व्यवस्था आवश्यक है ।

निष्कर्ष : आतंकवाद मानवता का सबसे बड़ा शत्रु है, जो विकास और शांति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बन चुका है । इसे समाप्त करने के लिए शिक्षा, आर्थिक सुधार, कड़े कानून और अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक हैं । प्रत्येक नागरिक को भी सतर्क और जागरूक रहकर आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना होगा । यदि हम एकजुट होकर इस समस्या का सामना करें, तो निश्चित रूप से एक सुरक्षित और समृद्ध विश्व का निर्माण संभव हो सकेगा ।

Quick Tip

शिक्षा, जागरूकता और शांति स्थापना से ही आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है । समाज को एकजुट होकर इसके खिलाफ लड़ना होगा ।

(iv) विज्ञान - वरदान या अभिशाप ।

उत्तर :

प्रस्तावना : विज्ञान ने मानव जीवन को सरल, सुविधाजनक और उन्नत बना दिया है । आज विज्ञान के कारण ही हम नई-नई खोजों, तकनीकी प्रगति और बेहतर जीवनशैली का आनंद ले रहे हैं । परंतु, विज्ञान के अत्यधिक और अनुचित प्रयोग से कई गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं । यह एक दोधारी तलवार की तरह है, जिसका उपयोग यदि सही दिशा में किया जाए तो यह वरदान है, लेकिन यदि इसका दुरुपयोग हो तो यह अभिशाप बन सकता है ।

विज्ञान का वरदान : विज्ञान ने मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है, जिससे हमें अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं ।

- **चिकित्सा में प्रगति :** विज्ञान ने चिकित्सा क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की है । पहले असाध्य माने जाने वाले रोगों के इलाज संभव हो गए हैं । नई दवाइयाँ, सर्जरी तकनीक, और कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण जैसी विधियाँ विज्ञान की ही देन हैं ।
- **शिक्षा और संचार के साधन :** इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल फोन और ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है । दूरस्थ शिक्षा आज संभव हो पाई है ।
- **यातायात और औद्योगिकीकरण :** विज्ञान ने परिवहन को तीव्र और आरामदायक बना दिया है । हवाई जहाज, रेलगाड़ियाँ और इलेक्ट्रिक वाहनों ने यात्राओं को सुगम कर दिया है । औद्योगिकीकरण ने उत्पादन क्षमता बढ़ाई और आर्थिक प्रगति को संभव बनाया ।
- **खगोल और अंतरिक्ष विज्ञान :** विज्ञान की मदद से मनुष्य ने चंद्रमा और मंगल ग्रह तक अपनी पहुँच बनाई है । अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में बड़े-बड़े प्रयोग हो रहे हैं ।

- **कृषि क्षेत्र में योगदान :** नई तकनीकों के उपयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। उन्नत बीज, सिंचाई प्रणाली, और कृषि यंत्रों ने किसानों को लाभान्वित किया है।

विज्ञान का अभिशाप : जहाँ विज्ञान ने मानव जीवन को उन्नत बनाया है, वहीं इसके दुष्प्रभाव भी सामने आए हैं। जब विज्ञान का उपयोग अनुचित रूप से किया जाता है, तो यह मानवता के लिए एक गंभीर खतरा बन सकता है।

- **परमाणु हथियार :** विज्ञान ने विनाशकारी परमाणु हथियारों को जन्म दिया है, जो किसी भी समय विश्व को नष्ट करने की क्षमता रखते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बमों ने इसकी भयावहता को स्पष्ट कर दिया।
- **प्रदूषण और पर्यावरण संकट :** विज्ञान और औद्योगिकीकरण ने प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। कारखानों से निकलने वाला धुआँ, प्लास्टिक कचरा और जल संसाधनों का दूषित होना आज की बड़ी समस्याएँ हैं।
- **बेरोजगारी :** विज्ञान के विकास ने मशीनों को मानव श्रम का विकल्प बना दिया है। कई स्थानों पर रोबोट और स्वचालित यंत्रों के कारण मजदूरों की आवश्यकता कम हो गई है, जिससे बेरोजगारी बढ़ रही है।
- **नैतिक पतन :** विज्ञान के माध्यम से मनोरंजन के क्षेत्र में आई प्रगति ने लोगों को व्यसन और विलासिता की ओर आकर्षित कर दिया है, जिससे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।
- **साइबर क्राइम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का खतरा :** विज्ञान ने डिजिटल दुनिया को जन्म दिया, लेकिन इसके साथ ही साइबर क्राइम, डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अधिक विकास से भी कई खतरे उत्पन्न हो सकते हैं।

विज्ञान का संतुलित उपयोग : विज्ञान एक शक्ति है, जिसका सही और संयमित उपयोग करना आवश्यक है। इसका उद्देश्य मानवता की सेवा करना होना चाहिए, न कि विनाश को आमंत्रण देना। यदि विज्ञान को नैतिकता और मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा जाए, तो यह निश्चित रूप से केवल वरदान ही सिद्ध होगा। वैज्ञानिक खोजों और अनुसंधानों को समाज के कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए, जिससे इसका दुरुपयोग रोका जा सके।

निष्कर्ष : विज्ञान ने मानव जीवन को एक नई दिशा दी है। यह मानव सभ्यता के लिए एक अमूल्य उपहार है, लेकिन इसका दुरुपयोग विनाशकारी हो सकता है। इसलिए, विज्ञान को सही दिशा में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि यह समाज के विकास में सहायक हो सके। विज्ञान को एक वरदान के रूप में बनाए रखने के लिए नैतिकता और विवेक का पालन आवश्यक है।

Quick Tip

विज्ञान तभी वरदान है, जब इसका उपयोग मानवता के कल्याण के लिए किया जाए। यदि इसका दुरुपयोग किया जाए, तो यह अभिशाप बन सकता है।

12.(क) (i) 'नयनम्' का सन्धि-विच्छेद है।

- (अ) नै + अनम्
(ब) नय + अनम्

- (स) ने + अनम्
(द) नय + नम्

Correct Answer : (ब) नय + अनम्

उत्तर : 'नयनम्' शब्द का सन्धि-विच्छेद इस प्रकार होता है : नय + अनम् । यहाँ 'नय' का अर्थ 'नेतृत्व' या 'नेत्र' (आँख) से संबंधित होता है और 'अनम्' प्रत्यय के रूप में जुड़ता है । इस शब्द में **यण सन्धि** का प्रयोग हुआ है, जहाँ 'अ' और 'य' के मेल से 'नय' से 'नयन' बनता है ।

Quick Tip

यण सन्धि में जब 'अ' या 'आ' के बाद 'य', 'व' आदि आते हैं, तो वे स्वर के साथ मिलकर नए रूप में परिवर्तित हो जाते हैं ।

(ii) 'कलाविव' का सन्धि-विच्छेद है ।

- (अ) कला + विव
(ब) कलौ + इव
(स) कल + आविव
(द) कला + आविव

Correct Answer : (ब) कलौ + इव

उत्तर : 'कलाविव' शब्द का सन्धि-विच्छेद इस प्रकार होता है : कलौ + इव । यहाँ दीर्घ सन्धि हुई है, जहाँ 'औ' का निर्माण 'अ' और 'उ' के मेल से होता है ।

सन्धि नियम : जब किसी शब्द का अंतिम अक्षर 'अ' या 'आ' हो और अगले शब्द का पहला अक्षर 'इ' या 'ई' हो, तो दीर्घ स्वर का निर्माण होता है ।

उदाहरण :

- रामौ + इव → रामाविव
- गुरू + इव → गुराविव

Quick Tip

दीर्घ सन्धि में जब अकारांत शब्द के बाद उकारांत या इकारांत शब्द आता है, तो वे मिलकर दीर्घ स्वर में बदल जाते हैं ।

(iii) 'वृद्धः' का सन्धि-विच्छेद है ।

- (अ) वृ + द्धः
(ब) व् + द्धय
(स) वृध् + अधः

(द) वृध् + धः

Correct Answer : (द) वृध् + धः

उत्तर : 'वृद्धः' शब्द का सन्धि-विच्छेद इस प्रकार होता है : वृध् + धः । यहाँ संयुक्त व्यंजन सन्धि हुई है, जिसमें 'ध' और 'ः' के मेल से 'द्ध' का रूप बनता है ।

सन्धि नियम : संस्कृत में जब किसी शब्द का अंतिम स्वर व्यंजन से मिलकर संयुक्त ध्वनि उत्पन्न करता है, तो इसे संयुक्त व्यंजन सन्धि कहते हैं ।

उदाहरण :

- बुध् + धिः → बुद्धिः
- मृद् + धः → मृदुः

Quick Tip

संयुक्त व्यंजन सन्धि में जब दो व्यंजन मिलते हैं, तो वे अक्सर एक संयुक्त ध्वनि में परिवर्तित हो जाते हैं ।

12.(ख) निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास का नाम लिखिए : (i) 'अनुरूपम्' का विग्रह करके समास का नाम लिखिए ।

उत्तर :

विग्रह : अनु + रूपम् = अनुरूपम्

समास का नाम : उपपद समास

व्याख्या : 'अनुरूपम्' शब्द 'अनु' उपसर्ग और 'रूपम्' पद से मिलकर बना है । यहाँ 'अनु' का अर्थ 'के अनु-सार' या 'समान' होता है और 'रूपम्' का अर्थ 'आकार' या 'स्वरूप' होता है । जब कोई उपसर्ग या क्रिया विशेषण संज्ञा या विशेषण के साथ मिलकर नया अर्थ उत्पन्न करता है, तो इसे ****उपपद समास**** कहा जाता है ।

Quick Tip

जब कोई संज्ञा या विशेषण उपसर्ग के साथ मिलकर नया शब्द बनाता है, तो उसे उपपद समास कहा जाता है ।

(ii) 'श्रेष्ठ पुरुषः' का विग्रह करके समास का नाम लिखिए ।

उत्तर :

विग्रह : श्रेष्ठः च पुरुषः = श्रेष्ठ पुरुषः

समास का नाम : कर्मधारय समास

व्याख्या : 'श्रेष्ठ पुरुषः' दो शब्दों से मिलकर बना है – 'श्रेष्ठ' (उत्तम) और 'पुरुष' (मनुष्य) । जब विशेषण और विशेष्य (गुण और व्यक्ति) मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं, तो इसे ****कर्मधारय समास**** कहा जाता है । यहाँ 'श्रेष्ठ' विशेषण है और 'पुरुष' संज्ञा है, जिसका अर्थ 'उत्तम पुरुष' होता है ।

Quick Tip

जब विशेषण और संज्ञा मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं, तो वह कर्मधारय समास कहलाता है ।

(iii) 'मीनाक्षीः' का विग्रह करके समास का नाम लिखिए ।

उत्तर :

विग्रह : मीनयोः अक्षिणी यस्याः सा = मीनाक्षीः

समास का नाम : तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष)

व्याख्या : 'मीनाक्षी' शब्द 'मीन' (मछली) और 'अक्षी' (आँखें) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ 'मछली जैसी आँखों वाली स्त्री' होता है । यहाँ 'मीनयोः अक्षिणी' (मछली की आँखें) का संक्षिप्त रूप 'मीनाक्षी' बना है । जब संज्ञा या विशेषण में षष्ठी विभक्ति (के/की) जुड़कर नया शब्द बनाता है, तो उसे ****षष्ठी तत्पुरुष समास**** कहा जाता है ।

Quick Tip

षष्ठी तत्पुरुष समास में पहला पद षष्ठी विभक्ति में (के/की) होता है, जो मिलकर एक नया शब्द बनाता है ।

13. बैंक में खाता खोलने के लिए बैंक प्रबन्धक को प्रार्थना पत्र लिखिए ।

उत्तर :

सेवा में,

बैंक प्रबंधक महोदय

(बैंक का नाम)

(शाखा का पता)

दिनांक : _____

विषय : बचत खाता खोलने हेतु प्रार्थना पत्र ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके बैंक में अपना एक बचत खाता खोलना चाहता/चाहती हूँ । मेरी निम्न-लिखित जानकारी है :

- नाम : (आपका नाम)

- पता : (आपका पूर्ण पता)
- मोबाइल नंबर : (आपका मोबाइल नंबर)
- ईमेल आईडी : (यदि हो तो)

मैं बैंक की सभी शर्तों और नियमों का पालन करने के लिए सहमत हूँ। कृपया मेरा खाता खोलने की प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने की कृपा करें। साथ ही, कृपया मुझे आवश्यक दस्तावेजों की सूची प्रदान करने की कृपा करें।

आपकी कृपा हेतु मैं सदा आभारी रहूँगा/रहूँगी।

सधन्यवाद,

(आपका नाम)

(आपका पता)

(आपका हस्ताक्षर)

Quick Tip

बैंक खाता खोलने के लिए सामान्यतः पहचान पत्र, निवास प्रमाण पत्र और पासपोर्ट साइज फोटो की आवश्यकता होती है।

अथवा

अपनी गली / मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय

नगर निगम, (नगर का नाम)

दिनांक : _____

विषय : गली/मोहल्ले की नालियों की सफाई हेतु अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं (आपका नाम), (आपके मोहल्ले/गली का नाम), (नगर का नाम) का निवासी/निवासिनी हूँ। हमारे मोहल्ले की नालियाँ पिछले कई दिनों से गंदगी से भरी पड़ी हैं, जिससे बदबू और बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। इसके कारण स्थानीय निवासियों को बहुत असुविधा हो रही है और मच्छरों के कारण डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियाँ फैलने की आशंका है।

अतः आपसे निवेदन है कि शीघ्र ही सफाई कर्मचारियों को भेजकर हमारे मोहल्ले की नालियों की सफाई करवाने की कृपा करें, ताकि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचा जा सके। आपकी त्वरित कार्रवाई हेतु हम आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद,

(आपका नाम)

(आपका पता)
(आपका हस्ताक्षर)

Quick Tip

स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को रोकने के लिए नालियों की सफाई आवश्यक है। नगर निगम से संपर्क कर उचित कार्रवाई की मांग करें।

14.(क)(i) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के धातु एवं प्रत्यय का योग स्पष्ट कीजिए।

(अ) 'महत्वम्'

उत्तर :

धातु : महत् (महा)

प्रत्यय : त्व

व्याख्या : 'महत्वम्' शब्द 'महत्' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'महानता' या 'विशालता' होता है। इसमें 'त्व' प्रत्यय जोड़ा गया है, जिससे यह संज्ञा रूप में परिवर्तित हो गया और इसका अर्थ 'महानता' हो गया।

Quick Tip

'त्व' प्रत्यय जुड़ने से विशेषण संज्ञा में परिवर्तित हो जाता है, जैसे – 'गौरव' से 'गौरवत्व'।

(ब) 'जगत्वा'

उत्तर :

धातु : जन् (जन्म)

प्रत्यय : त्वा

व्याख्या : 'जगत्वा' शब्द 'जन्' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'जन्म' से संबंधित होता है। इसमें 'त्वा' प्रत्यय जोड़ा गया है, जिससे यह क्रियावाची विशेषण बन गया।

Quick Tip

'त्वा' प्रत्यय मुख्यतः क्रिया के साथ संलग्न होकर विशेषण रूप में प्रयोग किया जाता है।

(स) 'मतिमती'

उत्तर :

धातु : मन् (सोचना, बुद्धि)

प्रत्यय : मत + मतुप्

व्याख्या : 'मतिमती' शब्द 'मति' (बुद्धि) धातु से बना है, जिसमें 'मत्तुप्' प्रत्यय जोड़ा गया है। इसका अर्थ 'जिसमें बुद्धि हो' होता है।

Quick Tip

'मत्तुप्' प्रत्यय विशेषण निर्माण के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे – 'बलवान' (बल + मत्तुप्)।

14.(क)(ii) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का प्रत्यय लिखिए :

(अ) 'बलवती'

उत्तर :

प्रत्यय : वती

व्याख्या : 'बलवती' शब्द 'बल' से बना है, जिसमें 'वती' प्रत्यय जोड़ा गया है। यह दर्शाता है कि कोई स्त्री बल से युक्त है।

Quick Tip

'वती' प्रत्यय स्त्रीलिंग विशेषण बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे – 'विद्यावती' (विद्या + वती)।

(ब) 'गुरुत्वम्'

उत्तर :

प्रत्यय : त्वम्

व्याख्या : 'गुरुत्वम्' शब्द 'गुरु' से बना है, जिसमें 'त्वम्' प्रत्यय जोड़ा गया है। इसका अर्थ 'गंभीरता' या 'महत्त्व' होता है।

Quick Tip

'त्वम्' प्रत्यय विशेषण से संज्ञा बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे – 'महत्त्वम्' (महान + त्वम्)।

(स) 'पठित्वा'

उत्तर :

प्रत्यय : त्वा

व्याख्या : 'पठित्वा' शब्द 'पठ' (पढ़ना) धातु से बना है, जिसमें 'त्वा' प्रत्यय जोड़ा गया है। यह दर्शाता है कि कार्य पूर्ण हो चुका है, जैसे 'पढ़ने के बाद'।

Quick Tip

'त्वा' प्रत्यय क्रिया से विशेषण बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे – 'लिखित्वा' (लिखने के बाद)।

14.(ख) रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम का उल्लेख कीजिए :

(i) 'आकाशः छात्रैः समं स्नाति ।'

उत्तर :

विभक्ति : तृतीया विभक्ति (कर्मकरण विभक्ति)

नियम : तृतीया विभक्ति 'संगति' (साथ होने) का बोध कराने के लिए प्रयुक्त होती है।

व्याख्या : वाक्य में 'छात्रैः' पद तृतीया विभक्ति में है। जब कोई कार्य किसी के साथ मिलकर किया जाता है, तब उस संज्ञा शब्द को तृतीया विभक्ति में रखा जाता है। यहाँ 'छात्रैः समं' का अर्थ है **'छात्रों के साथ'**, जो 'समं' शब्द के कारण तृतीया विभक्ति में आया है।

Quick Tip

'समं' के साथ तृतीया विभक्ति आती है, जैसे – 'गुरुभिः समं गच्छति' (गुरु के साथ जाता है)।

(ii) 'श्रीगणेशाय नमः ।'

उत्तर :

विभक्ति : चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

नियम : चतुर्थी विभक्ति 'समर्पण' या 'नमन' के अर्थ में प्रयुक्त होती है।

व्याख्या : वाक्य में 'श्रीगणेशाय' पद चतुर्थी विभक्ति में है। संस्कृत में जब किसी को 'नमन', 'प्रणाम' या 'समर्पण' किया जाता है, तो चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यहाँ 'नमः' क्रिया के साथ 'गणेश' शब्द को चतुर्थी विभक्ति में रखा गया है, जिसका अर्थ **'गणेश को नमस्कार'** है।

Quick Tip

'नमः', 'स्वाहा', 'स्वधा' और 'केशाय' जैसे शब्दों के साथ चतुर्थी विभक्ति आती है, जैसे – 'रामाय नमः' (राम को नमस्कार) ।

(iii) 'मातुः हृदयं कन्यां प्रति स्निग्धं भवति ।'

उत्तर :

विभक्ति : षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

नियम : षष्ठी विभक्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के साथ संबंध दिखाने के लिए प्रयुक्त होती है ।

व्याख्या : वाक्य में 'मातुः' पद षष्ठी विभक्ति में है, जो यह दर्शाता है कि **'हृदय' (हृदय) किसका है ?** । संस्कृत में किसी के स्वामित्व या संबंध को प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है । यहाँ **'मातुः हृदयं' का अर्थ 'माता का हृदय' होता है ।

Quick Tip

षष्ठी विभक्ति स्वामित्व या संबंध दर्शाने के लिए प्रयुक्त होती है, जैसे – 'रामस्य पुस्तकं' (राम की पुस्तक) ।